REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2023

''रीवा जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पठन–पाठन के वातावरण एवं परिसर की स्वच्छता पर ध्यान देने का अध्ययन''

प्रसन्न सिंह[1] , डॉ. एस.के. त्रिपाठी[2]
[1]शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]सहायक प्राध्यापक शिक्षा , शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

विद्यार्थी चाहे विज्ञान या कला संकाय का हो दोनों ही विद्यार्थियों में पठन–पाठन के वातावरण का निर्माण उनके परिश्रम के द्वारा ही किया जाता है, जिनकी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों में अपनी पठन–पाठन के वातावरण विकसित की जा सकती है, जिसका प्रभाव विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक पड़ता है। अतः माता–पिता, शिक्षक, अभिभावक का कर्तव्य है, कि वे विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ऊँचा उठाने के लिए उनमें अच्छी पठन–पाठन के वातावरण का विकास करें। अतः उक्त बातें अध्ययन की आवश्यकता को व्यक्त करता है।

मुख्य शब्द – शासकीय, अशासकीय, विद्यालय, छात्र, पठन–पाठन एवं स्वच्छता।

प्रस्तावना –

किसी भी राष्ट्र के विकास में अज्ञानता सबसे बड़ी बाधा है। भारत को लगभग 75 वर्ष स्वतंत्रता मिलने के बाद भी अज्ञानता यहाँ पर अपनी उच्चतम सीमा पर है। यद्यपि भारत में शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हो रहा है लेकिन आज भी अज्ञानता की अपेक्षा में उनकी स्थिति कमतर है, वास्तव में अज्ञानता विभिन्न समसामयिक समस्याओं को जन्म देती है। इस अज्ञानता के कारण भारत में जिन समस्याओं का वर्चस्व बना हुआ है, उनमें धार्मिक भावना, क्षेत्रवाद, जातिवाद, परिवारवाद, भाषावाद एवं प्रान्तवाद इत्यादि प्रमुख हैं। ये समस्याएँ मानव जीवन में संघर्ष को जन्म देती है। इस अज्ञानता के फलस्वरूप मानव जीवन में सामाजिक सम्बन्धों का विकास नहीं हो पाता है। साथ ही प्रजातंत्र में समाज के नागरिकों के अधिकारों व कर्तव्यों का ज्ञान भी उन्हें कदापि नहीं हो पाता है। निर्वाचन एवं मत के बारे में उन्हें सही बोध कतई नहीं होता। अतः नवीन ज्ञान प्राप्त करने में शोध की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। अतएव यह कहना मैं उचित समझता हूँ कि नवीन शोध सन्दर्भों की बात करने में तार्किक बोध की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आज भारतीय समाज अनेक संक्रमणकारी परिस्थितियों से जूझ रहा है, जिसके कारण भारतीय जनमानस के जीवन में विभिन्न विडम्बनायें एवं समस्यायें विद्यमान हैं। इन समस्याओं में मुख्य रूप से बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि, अपराध, पारिवारिक तनाव व विघटन, सांस्कृतिक विलम्बता, निर्धनता की समस्यायें प्रमुखता के साथ दृष्टिगोचर होती है, जबकि शोध यथार्थ दृष्टिकोण से मानव के सामाजिक समस्याओं को हल करने का सतत्

प्रयास करता है। अतः भारत जैसे विकासशील देश के हितार्थ उपर्युक्त समस्याओं के समाधान हेतु शोध सृजन की अत्यन्त महती आवश्यकता है।

विश्लेषण –

जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के पठन–पाठन के वातावरण का आंकलन करने के लिये चयनित छात्रों से सर्वेक्षण के दौरान अनुसूची के माध्यम से मौलिक तथ्यों को सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक व्याख्या की गयी है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक 1
छात्रों के पठन–पाठन के वातावरण का विवरण

क्र.	वर्गीकरण एवं विवरण	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय		अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	
		छात्रों की संख्या	प्रतिशत	छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1	अत्यन्त उच्च स्तर का है	476	66.11	483	67.08
2	मध्यम उच्च स्तर का है	151	20.97	143	19.86
3	सामान्य उच्च स्तर का है	65	9.03	61	8.47
4	कुछ कह नहीं सकते	28	3.89	33	4.58
	कुल योग	720	100.00	720	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि यह छात्रों के पठन–पाठन के वातावरण के विवरण से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से चयनित कुल 720 छात्रों में से 476 छात्रों ने पठन–पाठन का वातावरण अत्यन्त उच्च स्तर का बताया, जिनके प्रतिशत 66.11 है, 151 छात्रों ने मध्यम उच्च स्तर का बताया, जिनके प्रतिशत 20.97 है, 65 छात्रों ने पठन–पाठन का वातावरण सामान्य उच्च स्तर का बताया, जिनके प्रतिशत 9.03 है और 28 छात्रों ने बताया कि कुछ कह नहीं सकते, जिनके प्रतिशत 3. 89 है। इसी प्रकार अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से चयन किये गये कुल 720 छात्रों में 483 छात्रों ने बताया कि पठन–पाठन का वातावरण अत्यन्त उच्च स्तर का है, जिनके प्रतिशत 67.08 है, 143 छात्रों ने पठन–पाठन का वातावरण मध्यम उच्च स्तर का बताया, जिनके प्रतिशत 19.86 है, 61 छात्रों ने पठन–पाठन का वातावरण सामान्य उच्च स्तर का बताया, जिनके प्रतिशत 8.47 है और 33 छात्रों ने पठन–पाठन के वातावरण के बारे में कहा कि कुछ कह नहीं सकते जिनके प्रतिशत 4.58 है।

जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों से परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिये जाने से सम्बन्धित प्राथमिक तथ्यों को सर्वेक्षण के समय अनुसूची के माध्यम से संग्रहित कर सारणी क्रमांक 2 में प्रस्तुत कर विवेचन किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक 2
छात्रों द्वारा परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिये जाने का विवरण

क्र.	वर्गीकरण एवं विवरण	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय		अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	
		छात्रों की संख्या	प्रतिशत	छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1	परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाता है	615	85.42	621	86.25
2	परिसर की स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाता है	86	11.94	73	10.14
3	कुछ कह नहीं सकते	19	2.64	26	3.61
	कुल योग	720	100.00	720	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि यह छात्रों द्वारा परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिये जाने के विवरण से सम्बन्धित है। शोधकर्ता द्वारा जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक से चयनित कुल 720 छात्रों में 615 छात्रों ने बतलाया कि परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाता है, जिनके प्रतिशत 85.42 है, 86 छात्रों ने बताया कि परिसर की स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाता है, जिनके प्रतिशत 11.94 है और 19 छात्रों ने कहा कि कुछ कह नहीं सकते, जिनके प्रतिशत 2.64 है। इसी प्रकार अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से चयन किये गये कुल 720 छात्रों में 621 छात्रों ने बताया कि परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाता है, जिनके प्रतिशत 86.25 है, 73 छात्रों ने बतलाया कि परिसर की स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाता है, जिनके प्रतिशत 10.14 है और 26 छात्रों ने कहा कि कुछ कह नहीं सकते जिनके प्रतिशत 3.61 है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चयन किये गये सबसे अधिक छात्रों ने पठन–पाठन का वातावरण अत्यन्त उच्च स्तर का बताया है एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चयनित सर्वाधिक छात्रों ने स्वीकारा कि परिसर की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाता है।

संदर्भ –

1. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010) – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. पाठक, पी.डी. (2006) – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006) – शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. राय, पारसनाथ (1997) – अनुसंधान परिचय, जैन एण्ड सन्स प्रिन्टर्स, आगरा।
5. अग्रवाल, जे.सी. (2007) – शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा